(१८१)

जागो लोको मत सोवो, न करो निंदसें प्यार,
जैसो स्वपनो रयनको, अैसो ए संसार।

(१८२)

उंचा चढ पुकारीया, बुमत मारी बहोत;
चेतनहारा चेतीयो, सिरपे आइ मोत।

(१८३)

सब कोइ मर जात हय, काऴ जाऴकी पास,
राम नाम पुकारतां, कोइक उबरा दास।

(१८४)

एक बुंदके कारने, रोता सब संसार,
अनेक बुंद खाली गये, तिनका कोन बिचार ?

(१८५)

मरतें मरतें झुग मुवा, अवसर मुवा न होय;
दास कबीरा युं मुवा, बहोर न मरना होय।

(१८६)

जो मरनेसे जग डरे, सो मेरे मन आनंद;
कब मरिये कब भेटीए, पुरन परमानंद।

(१८७)

मरुं मरुं सब कोइ कहे, मेरी मरे बलाय ;
मरना था सो मर चुका, अब कोन मरेहि जाय ?

(१८८)

मन मुवा माया मुई, संशय मुवा शरीर;
अविनाशी तो ना मरे, तुं क्युं मरे कबीर ?

(१८९)

जीवत सें मरनो भलो, जो मर जाने कोय;
मरने पहेले जो मरें, कुल उजीयारा होय।

(१९०)

मरतें मरतें जुग मुवा, सुत बित दारा जोय;
राम कबीरा युं मुवा, एक बराबर होय ।

(१९१)

ना मुवा ना मर गया, नहिं आवे नहिं जाय ;
ए चरित्र करतारका, उपजें और समाय।

(१९२)

जोय मरे सो जीव हय, रमता राम न होय,
जन्म मरणसें न्यारा हय, साहेब मेरा सोय।

(१९३)

हरि मरि हे, तो हम हुं मरि हुं,
हरि न मरि हे, तो हम काहे मरि हुं ?

(१९४)

जब तक आश शरीरकी, निर्भय भया न जाय,
काया माया मन तजे, चौपट रहा बजाय।

(१९५)

अजहु तेरा सब मिटे, जो जुग माने हार,
घरमे झगडा होत हय, सो घर जारहि दार।

(१९६)

अजहु तेरा सब मिटे, जो मन राखे ठोर,
गम हो ते सब छोर दे, अगम पंथकु दोर।

(१९७)

में मेरा घर जाल्या, लिया पलिता हाथ;
जो घर जालो आपना, तो चलो हमारे साथे।

(१९८)

घर जाले घर उगरे, घर राखे घर जाय;
एक अचंबा देखिया, मडा कालको खाय।

(१९९)

कबीर ! मस्तक देख कर, मत घरो बिश्वास,
कबहु जागे भुत होय, करे पिंडको नाश।

(२००)

मस्तक तो तब जानीये, आपा घरे उठाय;
सहेज सुन्यमे घर करे, ताको काऴ न खाय।

(२०१)

सुली उपर धर करे, बिष करे अहार;
तिनको काळ कया करे ! जो आठे पहोर हुशियार!

(२०२)

सहेज सुन्यमें पाइये, जहां मरजी वहां मन;
कवीर चुन चुन ले गया, भीतर राम रतन ।

(२०३)

कुल थे सो गिर पडे, चरण कमळसें दुर;
कळीयोकी गत अगम हय, तो ते राम हजुर ।

(२०४)

पांच इंद्रि छठा मन, सत संगत सुचंत,
कहे कवीर जम क्या करे, जो सातो गांठ निचंत ।

(२०५)

जळती आई वादली, बरखन लागा अंगार,
उठ कबीरा दोर जा, दाझत हय संसार ।

(२०६)

संसार सारा सब दु:खी, खावे ओर रोवे,
दास कवीरा यु दु:खी, गावे ओर रोवे ।

(२०७)

सुखीया ढुंडत में फिरुं, सुखिया मिले न कोय;
जे के आगे दु:ख कहुं, सो पहेला उठे रोय ।

(२०८)

जे को आगे अेक कहुं, सो कहे अेकबिस;
अेकहिसे में दाइया, तो कहां काढुं बिस ।

(२०९)

बासुर सुख न रैन सुख, न सुख धुंप न छांय;
के सुख शरणे रामके, के सुख संतो मांय ।

(२१०)

स्वर्ग मुत्यु पाताळमें, पूर तिन सुख नांय;
सुख साहेबके भजनमे, ओर संतनके मांय ।

(२११)

संपत्त देख नव हरखिये, बिपत्त देख मत रोय;
संपत्त हय तहां बिपत्त हय, कर्ता करे सो होय ।

(२१२)

लक्ष्मी कहे में नित नवी, किसकी न पूरी आश;
कितने सिंहासन चढ चले, कितने गये निराश ।

(२१३)

संपत्त तो हरि मिलन, बिपत्त राम बियोग;
संपत्त बिपत्त राम कहा, आंन कहे सब लोग ।

(२१४)

हम जाने थे खायगे, बहुत जमा कियो माल;
ज्युकां त्युं रहे गया, पकड गया बे काल ।

(२१५)

धन अैसा सांचिये, जो धन आगे होय;
मुंढ मांथे गांठरी, जत न देखा कोय ।

(२१६)

सुखके मांथे सिल पडो, हरि हीरदेंसें जाय;
बलिहारी आ दु:खकी, के पळ पळ राम संभराय ।

(२१७)

सुखी सुखी सब कोई कहें, सुखमें जानत नाय;
सुखी स्वरुप आत्म अमर, जे जाणे सुख पाय ।

(२१८)

कबीर ! तलब न छोडीये, जब लग घरमें प्राण;
कोईक दिन श्री रामको, भनक पडेंगी कांन ।

(२१९)

कबीर ! तलब न छोडीये, निश्चय लिजे नाम;
मनख मजुरी देत तो, कयुं कर राखे राम ?

(२२०)

अनहोनी प्रभु कर शके, होनार मिट जाय;
कबीर, इन संसारमें, रामभजण सुख दाय ।

(२२१)

सबी रसायन में करी, हरिसा और न कोय,
रती ऐक धटमें संचरे, सब तन कंचन होय ।

(२२२)

कहेता हुं कहे जात हुं, सुनता हय सब कोय;
राम कहे भल होयगी, नहि तो भला न होय ।

(२२३)

कहे कबीर पुकारके, ऐ लेवो व्यवहार;
राम नाम जने बिनां, बुंडी मुवा संसार ।

(२२४)

भुप दुखी अबधु दु:खी, दु:खी रंक बिपरीत;
कहे कबीर ए सब दु:खी, सुखी संत मन जीत ।

(२२५)

सुमरनसे सुख होत हये, सुमरनसे दु:ख जाय,
कहे कबीर सुमरन किये, स्वामी मांहि समाय ।

<u>नाम - स्मरण</u> (२२६)

कबीर, सुमरन सार हय, ओर सकळ जंजाळ;
आदी अंत सब शोधीया, दुजा दीसे काल ।

(२२७)

कबीर ! निज सुख रामे हय, दुजा दु:ख अपार,
मनसा बाचा कर्मनां, निश्चय सुमरन सार ।

(२२८)

राम नामके लेत हि, होत पापका नाश;
जैसी चन्गि अन्गकी, पडी पुलाने घास ।

(२२९)

नाम जो रती एक हय, ओर पाप जो रती हजार;
एक रती घट संचरे, जार करे सब छार ।

(२३०)

राम नामकी औषधी, सद्गुरु दिये बताय,
औषध खाई पची रहे, ताके बेदन जाय ।

(२३१)

राम मंत्रका बीज हय, राम नाम तत्सार;
जे को जन हिरदें गरें, सो जन उतरे पार ।

(२३२)

राम कहो मन वश करो, एहि बडा हय अर्थ;
काहेको पढ पढ मरों, कौंतहि ज्ञान ग्रहन्थ ?

(२३३)

जीने नाम लिया उने सब किया, सब शास्त्रका भेद;
बिना नाम नर्के गयें, पढ पढ चारो बेद ।

(२३४)

एकहि शब्दमे सबहि कहा, सबहि अर्थ बिचार;
भजीये केवळ रामको, तजीये बिषयहि बिकार ।

(२३५)

कबीर ! हरिके नामसे, कौट बिघन टळ जाय,
राइ समान बसुदरा, कैटेक काष्ट जळाय ।

(२३६)

सुखमें सुमरन ना करे, दु:खमे करे सब कोय;
सुखमे जो सुमरन करे, तो दु:ख कहां के होय ?

(२३७)

सुखमे सुमरन ना करे, दु:खमे करे जो याद;
कहे कबीर ता दासकी, कौन सुने फरियाद ?

(२३८)

बिपत्त भली हरि नाम लेत, काया कसोटी दु:ख;
राम बिनां किस कामकी, माया संपत सुख ?

(२३९)

हरि सुमरन कोढी भला, गली गली पडे चाम;
कंचन देह जलाय दे, जो नहि भजे हरि नाम ।

(२४०)

जा घर संत ना सेविया, हरिको सुमरन नाहे;
सो घर मरहट सरिखा, भुत बसों ता मांहे ।

(२४१)

राम नाम तो रतन हय, जीव जतन करी राख;
जब पडेगी संकटी तब राखे रधुनाथ ।

(२४२)

जब जागे तब राम जप, सोवत राम संभार;
उठत बेठत आत्मा, चालतहि राम चितार ।

(२४३)

जीतेने तारे गगनमें, इतने शत्रु होय;
कृपा होय श्री रामकी, तो बाल न बांको होय ।

(२४४)

जे कोई सुमरन अंगको, पाठ करे मन लाय;
भक्ति ज्ञान मन उपजे, कहे कबीर समजाय ।

(२४५)

जप तप संयम सांधना, सब सुमरन के मांहि;
कबीर जाने या रामजन, सुमरत सम कछु नांहि ।

(२४६)

सहकामी सुमरन करे, पावे उत्तम धाम;
निष्कामी सुमरन करे, पावे अविचळ राम ।

(२४७)

पथ्थर पुंजे हरि मिले, तो में पुंजुं गिरिराय;
सबसें तो चक्कि भली, के पिस पिसके खाय ।

(२४८)

देह निरंतर देहरा, तामे प्रत्यक्ष देव;
राम नाम सुमरन करो, कहां पथ्थरकी सेव ?

(२४९)

पथ्थर मुख ना बोलहि, जो शिर डारो फुट;
राम नाम सुमरन करो, दुजा सबहि जूठ ।

(२५०)

कुबुद्धिको सुझे नहि, उठ उठ देवल जाय;
दिल देहराकी खबर नहीं, पथ्थर ते कहां पाय ?

(२५१)

पथ्थर पानी पुंज कर, पच पच मुवा संसार;
भेद निराला रहे गया, कोई बिरला हुवा पार ।

(२५२)

मक्के मदिनेमें गया, वहांभी हरका नाम,
में तुजें पुछुं हे सखी, किन देखा किस ठाम ?

(२५३)

राम नाम सब कोई कहे, ठाकोर और चोर;
धृव पल्हाद सब तर गये, एहि नाम कछु ओर ।

(२५४)

शुद्ध बिन सुमरन नही, भाव बिन भजन न होय,
पारस बिच परदा रहा, क्युं लोहा कंचन होय ।

(२५५)

सुमरन सिद्धि युं करो, ज्युं घाघर पनिहार;
हाले चाले सुरतमें, कहे कबीर बिचार ।

(२५६)

सुमरन सिद्धि युं करो, जैसे दाम कंगाळ;
कहे कबीर बिसरे नहि, पल पल लेत संभाळ ।

(२५७)

जैसी नैयत हराम पे, ऐसी हरसें होय;
चला जावे वैकुन्ठमें, पल्ला न पकडे कोई ।

(२५८)

बाहरे कया दिखलाईये, अंतर कहिये राम ?
नहि मामला खल्कसों, पडा धनिसें काम ।

(२५९)

माला तो करमें फिरें, जीभ फिरे मुख मांहि;
मनवा तो चौ दिश फिरे, अैसो सुमरन नाहि ।

(२६०)

सुमरन अैसो किजीये, खरे निशांने चोट;
सुमरन अैसो किजीये, हले नाहि जीभ होठ ।

(२६१)

होठ कंठ हाले नाहि, जीभ्या न नाम उच्चार;
गुप्त सुमरन जो खेले, सोहि हंस हमार।

(२६२)

अंतर ''हरि हिर'' होत हय, मुखकी हाजत नांहि;
सेहेजे धुन लागी रहे, संतनके घट मांहि।

(२६३)

अंतर जपीये रामजी, रोम रोम रन्कार;
सेहेजे धुंन लागी रहे, एहि सुमरन तत्सार।

(२६४)

सुमरन सुरति लगाय के, मुखसे कछु ना बोल;
बाहरे के पट देय के, अंतरके पट खोल।

(२६५)

लेह लागी तब जनीये कबु छुट न जाय;
जीवतहि लागी रहे, मुवा मांहि समाय।

(२६६)

बुंद् समाना समुद्रमें, जानत हय सब कोय;
समूद्र समाना बुंदमें, जाने बीरला कोय।

(२६७)

भक्त द्रार हय सांकडा, राई दसमा भाय;
मनहि जब रावत हो रहा, क्युं कर शके समाय ?

(२६८)

राई बातां बिसवा, फिर बिसनका बिश;
ऐसा मनवा जो करे, ताहि मिले जगदीश।

(२६९)

मेरा मन सुमरे रामको, मनमे राम समाय;
मनहि जब राम हो रहा, तो शिश नमावुं काय ?

(२७०)

कबीर ! मन निश्चिल करो, गोविंदके गुन गाय;
विश्चल बिनां न पाईये, कोटीक करो उपाय।

(२७१)

माला जपुं न कर जपुं, मुखसे कहुं न राम;
राम हमेश हमको जपे, में बेठा रहुं विश्राम।

(२७२)

नाम बिसारे देहका, जीव दसा सब जाय;
जबहि छोडे नामको, सबहि लागे आय।

(२७३)

राम जपे अनुरागसे, सब दुःख डाले धोय;
बिश्वासे तो हरि मिले, लोहा कंचन होय।

(२७४)

राम नाम पुकारतां, मिटा मोह दुःख ध्वंद;
मनकी दुबधा तब गई, जब गुरु मिले गोवंद।

(२७५)

निशदीन ऐक पलकहि, जो कहेवे राम कबिर !
ताके जनम जनम के , जहें पाप शरीर।

(२७६)

कलयुगमे जीवन अल्प हय, करीये बेग संभार;
तप साधन कछु ना बने, ताते नाम संभार।

(२७७)

नाम नैननमें रमी रहा, जाने बीरला कोय;
जाकु मिलीया सद्गुरु, ताकु मालम होय।

(२७८)

राजा राणा ना बडा, बडा जो सुमरे राम;
ताहि ते जन बडो, जो सुमरे निज नाम।

(२७९)

कबीर, में मागुं ए मांगना, प्रभु दिजे मोहे सोय;
संत समागम हरिकथा, हमारे निशदिन होय।

(२८०)

मुगटा जुगट मागुं नहि, भक्ति दान दिजो मोहे;
ओर कछु मागुं नहि, निशदिन जाचुं तोहे।

(२८१)

सुमरन मारग साचका, सद्‌गुरु दिये बताय;
स्वास उवासे सुमरतां, एक मिल्या आय ।

(२८२)

प्रेम बिना धीरज नहि, बिरहे बिना बैराग;
सद्‌गुरु बिना मिटे नहि, मन मनमाका दाग ।

(२८३)

पुराहि सद्‌गुरु बिना, हिरदा शुद्ध न होय;
मनसा वाचा कर्मना, सुत लिजे सब कोय ।

गुरु के बारे में - सदगुरुमहिमा (२८४)

गुरु बिन ज्ञान न उपजे, गुरु बिन मिले न भेव;
गुरु बिन संशय न मिटे, जय जय जय गुरुदेव ।

(२८५)

गुरु बिन ज्ञान न उपजे, गुरु बिन मिले न मोक्ष;
गुरु बिन लखे न सत्यको, गुरु बिन मिटे न दोष ।

(२८६)

गुरु नारायण रुप हय, गुरु ज्ञान को घाट;
सद्‌गुरु बचन प्रतापसें, मनके मिटे उच्चार ।

(२८७)

सद्‌गुरुके महिमा अनन्त, जिने अनन्त किया उपकार;
अनन्त लोचन उधाडया, अनन्त दिखावन हार ।

(२८८)

सद्‌गुरु समान को नहि, सप्त द्धिप नव खंड ;
तिन लोक ना पाइये, और अेकबिस ब्रहमंड ।

(२८९)

तिरथमें फळ ऐक हय, संत मिले फळ चार;
सद्‌गुरु मिले अनेक फळ, कहे कबीर बिचार ।

(२९०)

हरि कृपा तब जनीये, दे मानव अवतार;
गुरु कृपा तब जनीये, जब छोडावे संसार ।

(२९१)

जाके शीर गुरु ज्ञानी होय, सोहि तरत भव मांहे;
गुरु बिन जानो जन्तंको, कबु मुक्ति सुख नाहे ।

(२९२)

सदगुरु के भुज दोई हय, गोविंदके भुज चार;
गोविंदसे सब कछु सरें, पर गुरु उतारे पार ।

(२९३)

सदगुरु सत् का शब्द हय, जीने सत् दिया बताय;
जो सत् को पकड रहे, तो सत हि मांहे समाय ।

(२९४)

देवी बडी न देवता, सुरज बडा न चंद;
आद अंत दानो बडे, के गुरु के गोवंद ।

(२९५)

हरि रुठे गत ऐक हय, गुरु शरणागत जाय;
गुरु रुठे गत एको नहि, हरि न होय सहाय ।

(२९६)

गुरु गोविंद दोनो खडे, किसकें लागुं पाय;
बलिहारी आ गुरुकी, जीने गोविंद दिया बताय ।

(२९७)

पूंजा गुरुकी किजीये, सब पुंजा जेही मांहे;
जबलग सिंचे मुख तरु, साखा पत्र अघाय ।

(२९८)

सद्‌गुरुका ऐक देश हय, जो बसी जाने कोय;
कऊवा ते हंस होत हय, जान वरण कुल खोय ।

(२९९)

सब कछु गुरु पास हय, पाईये अपने भाग;
सेवक मन सोंपी रहे, निशदिन चरणे लाग ।

(३००)

गुरु गुंगा गुरु बावरा, गुरु देवनका देव;
जो तुं शिष्य श्यानां, तो कर गुरुकी सेव ।

(३०१)

शव्द बिचारी जो चले, गुरु मुख होय नेहाल;
काम क्रोध ब्यापे नहि, कब न ग्रासे काल ।

(३०२)

गुरु महिमा गावत सदा, मन अती राखी मोद;
सो भव फिर आवे नहि, बेठ प्रभुकी गोद ।

(३०३)

संशय खाया सफळ जुग, संशय कोई न खाय;
जे बेध्या गुरु अक्षरा, संशय चुंन चुंन खाय ।

(३०४)

पुरा सद्गुरु सेवतां, अंतर प्रगटे आप;
मनसा बाचा कर्मणा, मिटे जनम के ताप ।

(३०५)

गुरु गोविंद एक हय, दुजा हय ओ:कार;
आपा मेट जीवत मरे, तब पावे दिदार ।

(३०६)

जम द्वारे मजदूत मिले, करते खेंचा तांन;
उनसे कबु न छुटते, फिरतो चारो खांन ।

(३०७)

चार खांनमे भरमते, कबू न लेते पार;
सो तोको फेरा मिटा, सद्गुरुका उपकार ।

(३०८)

ज्ञान प्रकाशी गुरु मिला, सो बिसर मत जाय;
जब गोविंद कृपा करी, तब गुरु मिल्या आय ।

(३०९)

भला भया जो गुरु मिला, तीन तें पाया ज्ञान;
घट हि भित्तर चौतरा, ओर घट मांहि दीवांन ।

(३१०)

होंश न राखु मनमें, गुरु हय प्रत्यक्ष देव;
प्रेम साथ मन ले मिलुं, निशदिन करुं सेव ।

(३११)

गुरु सेवा जन बंदगी, हरि सुमरन बैराग;
ऐ चारो जब मिले, पुरन होवे भाग ।

(३१२)

गुरु लागा तब जानीये, मिटे मोह तन ताप;
हरख शोक दाजे नहि, तब हर आपो आप ।

(३१३)

कान फुका गुरु हदका, बेहदका गुरु नाहि;
बेहदका सद्गुरु हय, सोंच करो मन मांहि ।

(३१४)

गुरु लोभी शिष्य लालची, दोनो खेले दाव;
दोनो बुंडे बापडे, बेठ पथ्थरकी नाव ।

(३१५)

जाका गुरु हय लालची, दया नहि शिष्य मांहि;
ओ दोनोकु भेजीये, उज्जड कुवा मांहि ।

(३१६)

गुरु गुरु सब कहा करो, गुरुहि गुरमे भाव;
सो गुरु काहे किजीये, जो नहि बतावे दाव ?

(३१७)

बंधे सो बंधे मिला, छुटे कोन उपाय;
संगत करीऐ निर्बधकी, पळमें दिये छुडाय ।

(३१८)

पुराहि सदगुरु ना मिला, रहा अधुरा शिख;
स्वांग जतिका पेहेरके, घर घर मांगे भिख ।

(३१९)

सदगुरु अैसा किजीऐ, तत् दिखावे सार;
पार उतारे पलकमें, दर्पन दे दातार ।

(३२०)

कबीर ! गुरु गरवा मिला, रल गया आटा लोन;
जात पात कुल मिट गई, तब नाम धरेंगे कोन ?

(३२१)

सदगुरु साचा सुरवा, ज्युं ताते लोह लुवार;
कसनी दे निर्मळ किया, पात लिया़ तत्सार।

(३२२)

सदगुरु हमसे रीझ कर, ऐक कहा प्रसंग;
बादल बह्या प्रेमका, भीज गया सब अंग।

(३२३)

बलिहारी गुरु आपकी, पल पलमें कई बार;
पशु फेट हरिजन किये, करत न लागी वार।

(३२४)

गुरु पुंजावे संतको, संत कहे गुरु पुंज;
आमन सामन पुंजतां, पडी अगमकी सुंज।

<u>सतसंग विशे</u> (३२५)

कबीर कहे सो दिन बडो, जा दिन साध मिलाप;
अंख भर भर भेटीये, पाप शरीरा जाय।

(३२६)

साध मिले साहेब मिले, अंतर रही ना रेख;
मनसा बाचा कर्मणा, साधु साहेब एक।

(३२७)

संत समागम परमसुख, आंन अल्प सुख कछु ओर ;
मान सरोवर हंस हय, बंगला ठोरे ठोर।

(३२८)

चंदन जैसा संत हय, सर्प जैसा संसार;
अंगहिसे लपटा रहे, पर छांडे नहि बिकार।

(३२९)

संत मिले सुख उपजे, दुष्ट मिले दु:ख होय;
सेवा किजे संतकी, तो जनम् कृतार्थ सोय।

(३३०)

मिठी वेहेरी संतकी, जामें शीर अपार;
हरि रस जहां खुंटे नहि, पिवे वारमवार।

(३३१)

हरिजन आवत देखके, उठके मिलिये धाय;
न जानुं इस वेशमे, नारायण मिल जाय।

(३३२)

हरिजन मिले तो हरि मिले, मन पाया बिश्वास;
हरिजन हरिका रुप हय, ज्युं फुलनमें बास।

(३३३)

संत मिले तब हरि मिले, कहिए आद और अंत;
जो संतनको पर हरे, सो सदा तजे भगवंत।

(३३४)

दर्शन परसन संतका, करतन किजे कांन;
ज्युं उद्यम त्युं लाभ हये, ज्युं आळस त्युं हान।

(३३५)

ऐक धडी आधी धडी, आधी उनमें आध;
संगत करिऐ संतकी, तो कटे क्रोड अपराध।

(३३६)

साधु नदी जल प्रेमरस, तहां पछाडो अंग;
कहे कबीर निर्मळ भये, साधु जनके संग।

(३३७)

जा पळ दर्शन संतका, ता पळकि बलिहारी;
सत्नाम रसना बसें, लिजै जन्म सुधार।

(३३८)

दर्शन करना संतका, दिनमें कैइक बार;
चोमासाका मेध ज्युं, बहोत करे उपकार।

(३३९)

जीवन जोबन राजमद, अविचल रहा न कोय;
जा दिन जाय सत्संगमे, जीवनका फळ सोय।

(३४०)

राम मिलनके कारने, मों मन खडा उदास;
सत् संगतमें शोध ले, राम उनोके पास।

(३४१)

परबत परबत में फिरा, कारन अपने राम;
राम सरिखा जन मिला, तिने सरिया काम ।

(३४२)

करिये नित सत संगकु, बाधा सफळ मिटाय;
ऐसा अवसर ना मिला, दुर्लभ नर तन पाय ।

(३४३)

शरणे राखो साईयां, पुरो मनकी आस;
ओर न मेरे चाहिए, संत मिलनकी प्यास ।

(३४४)

कल्युगमें ऐक नाम हय, दुजा सरुप हय संत;
साचे मनसे सेविये, तो मिटे करम अनंत ।

(३४५)

मथुरा भावे द्धारका, भावे जा जगन्नाथ;
संत संगत हरि-भक्ति बिना, कछु न आये हाथ ।

(३४६)

संत जहां सुमरन सदा, आठो पहोर अभुल;
भर भर पिवे रामरस, प्रेम पिलाया फुल ।

(३४७)

फुटा मन बदलाय दे, साधु बडे सोनार,
तुटी होवे रामसें, फेर संधावन हार ।

(३४८)

इष्ट मिले मन मिले, मिले सकळ रस रीती;
कहे कबीर तहां जाइए, येह संतनकी प्रिती ।

(३४९)

कथा किरतन करनकी, जाके निशदिन रीती;
कहे कबीर वा दाससों, निश्चिय कीजे प्रिती ।

(३५०)

कथा किरतन रात दिन, जाके उद्यम येह;
कहे कबीर ता साधके, चरण कमलकी खेहु ।

(३५१)

कथा किरतन छांडके, करे जो ओर उपाय;
कहे कबीर ता साधके, पास कोई मत जाय ।

(३५२)

काम कथा सुनिये नहि, सुनके उपजे काम;
कहे कबीर बिचारके, बिसर जाय हरि नाम ।

(३५३)

कथा किरतन सुननको, जो कोई करे स्नेह;
कहे कबीर ता दासको, मुक्तिमें नहि संदेह ।

(३५४)

राज द्वार न जाइए, जो कोटीक मिलें हेम;
सुपच भगतके जाईए, ऐ बिष्णुका नेम ।

(३५५)

संगत किजे साधकी, ज्युं गाधीके पास;
गाधी कछुं ले दे नहि, तोऊ आवे वास सुवास ।

(३५६)

संगत किजे साधकी, साहेब किजे याद;
सुकृतकि वाहि घडी, बाकी दिन बरबाद ।

(३५७)

संगत किजे संतकी, कदी ना निर्फळ होय;
लोहा पारस परसते, शोभी कंचन होय ।

(३५८)

संगत किजे साधकी, कदी ना निर्फळ होय;
चंदन होसी बावला, लींब कहे ना कोय ।

(३५९)

संगत किजे संतकी, हरे सबकी ब्याध;
ओछी संगत निचकी, आठो पहोर उपाध ।

(३६०)

सो दिन गया अकाजमें, संगत भहि ना संत;
प्रेम बिना पशु जीवना, भाव बिना भटकंत ।

(३६१)

संत मिले तब हरि मिले, युं सुख मिले न कोय,
दर्शन ते दुरमन करे, मन अती निर्मळ होय ।

(३६२)

हरि मिला तब जानिये, दर्शण देवे संत;
मनसा बाचा कर्मना, मिटे करम अनन्त ।

(३६३)

पुष्पमें ज्युं बास हये, ब्याप रहा सब मांहि;
सन्तो सोहि पाईपे, और कहुं कछु नाहि ।

(३६४)

दया गरीबी बंदगी, समता शिल स्वभाव,
ए ते लक्षण साधके, कहे कबीर सद्भाव ।

(३६५)

मान नहि अपमान नहि, अैसे शितल संत;
भवसागर ऊतर पडे, तोडे जमके दंत ।

(३६६)

आशा तजे माया तजे, मोह तजे अरु मान;
हरख शोक निंदा तजे, सो कहे कबीर संत जान ।

(३६७)

संत सोई सहराइये, जीने कनक कामिनी त्याग;
और कुछ इच्छा नहि, निशदीन रहे अनुराग ।

(३६८)

हरिजन हारा हि भला, जीत न दे संसार;
हारा हरि पें जायगा, जीता जमकी लार ।

(३६९)

सुखके माथे सिल पडो, हरि हिरदंसे जाय;
बलिहारी आ दु:खकी, पल पल राम संभळाय ।

(३७०)

आपा त्यां अवगुण अनंन्त, कहे संत सब कोय;
आपा तज हरिको भजे, संत कहावे सोय ।

(३७१)

हरिजन असा चाहिए, जैसा फोफल भंग,
आप करावे टुकरा, ओर परमूख राखे रंग ।

(३७२)

तन ताप जीनको नहि, न माया मोह संताप;
हरख शोक आशा नहि, सो हरिजन हर आप ।

(३७३)

संतनके मन भय रहे, भय धर करे बिचार;
निशदिन नाम जपवो करे, बिसरत नहि लगार ।

(३७४)

हरिजन केवळ होत हय, जाको हरिका संग;
बिपत पडे बिसरे नहि, चढे चोगणां रंग ।

(३७५)

आस्न तो एकन्त करे, कामिन संगत दुर;
शितळ संत शिरोमणि, ऊनका ऐसा नुर ।

(३७६)

आपा तज हरिको भजे, नखसिख तजे बिकार;
जब जीवनसें निरवेर, साध मता हय सार ।

(३७७)

देखो सब मे राम हय, एकहि रस भरपुर;
जैसे ऊखते सब बना, चिनी सक्कर गूर ।

(३७८)

जब लग नाता जातका, तग लग भगत न होय;
नाता तोरे हरि भजे, भगत कहावे सोय ।

(३७९)

चार चेंन हरि भक्तके, प्रगट देखाइ देत;
दया धर्म आधिनता, पर दु:खको हर लेत ।

(३८०)

हाट हाट हिरा नहि, कंचनका नहि पहाड;
सिंहनका टोला नहि, संत बिरला संसार ।